IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा में सामाजिक–आर्थिक स्थिति की भूमिका''

रवि भास्कर[1], डॉ0 (प्रो0) एस0सी0 पचौरी[2]

शोधार्थी[1], प्राचार्य/डीन[2]

शिक्षा संकाय, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

सार – किसी भी देश के शैक्षिक विकास में सामाजिक–आर्थिक स्थिति का एक अहम योगदान होता है। यह किसी व्यक्ति या समूह की आर्थिक, शैक्षिक और व्यावसायिक स्थिति को प्रदर्शित करती है एवं संसाधनों, अवसरों और जीवन के परिणामों तक पहुँच के रूप में एक महत्वपूर्ण निर्धारक का कार्य करती है। यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक प्राप्ति, कैरियर मार्गदर्शन और जीवन की समग्र गुणवत्ता सहित कई कारकों को प्रभावित करता है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति में निहित असमानताएं अक्सर असमानता के चक्र को बनाए रखती हैं, जो हाशिए पर पड़े समुदायों को असमान रूप से प्रभावित करती हैं। यह लेख स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में सामाजिक–आर्थिक स्थिति और विभिन्न सामाजिक निर्धारकों के बीच जटिल संबंधों की खोज करता है एवं संबंधित असमानताओं को कम करने और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसरों तक समान पहुँच की आवश्यकता पर जोर देता है।

मुख्य शब्दः– स्नातक स्तर, विद्यार्थी, सामाजिक–आर्थिक स्थिति।

स्नातक स्तर उच्च शिक्षा का एक महत्वपूर्ण चरण है जो विद्यार्थियों को चुने हुये क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने और अपने करियर की नींव रखने का अवसर प्रदान करता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं जिसमें उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी भी देश की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उसके संपूर्ण विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक होती है। यह विभिन्न कारकों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, आय, रोजगार, गरीबी, असमानता आदि से मिलकर बनती है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता को समझने में एक मौलिक अवधारणा है जो व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों को आकार देती है। यह किसी व्यक्ति या परिवार की आय, शिक्षा स्तर और व्यवसाय के संयुक्त माप को संदर्भित करता है, जो सामूहिक रूप से संसाधनों, अवसरों और जीवन की गुणवत्ता तक पहुँच को प्रभावित करता है। यह सामाजिक स्तरीकरण का एक प्रमुख निर्धारक है एवं नई पीढ़ियों में भविष्य के परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक स्थिरता जैसे विभिन्न सामाजिक परिणामों के बीच संबंधों का व्यापक रूप से अध्ययन है।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति को तीन वर्गों उच्च, मध्यम एवं निम्न में बाँटा गया है– उच्च, मध्यम एवं निम्न। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति आमतौर पर संसाधनों तक अधिक पहुँच, बेहतर स्वास्थ्य परिणामों और बढ़ी हुई सामाजिक पूंजी से जुड़ा होता है। मध्यम के अंतर्गत मध्यम आय, शिक्षा एवं व्यावसायिक स्थिति जो अक्सर सीमित स्थिरता लेकिन धन

संचित करने की विशेषता रखते हैं। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले व्यक्तियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और रोजगार के अवसरों तक सीमित पहुँच सहित महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये असमानताएँ अक्सर गरीबी, सामाजिक बहिष्कार और कम ऊपर की ओर गतिशीलता के चक्र में योगदान करती हैं।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रमुख दो कारक हैं– आर्थिक कारक एवं सामाजिक कारक। आर्थिक कारक वे हैं जो किसी अर्थव्यव़स्था की गतिविधियों को प्रभावित करते हैं और लोगों के जीवन स्तर को निर्धारित करते हैं। ये कारक व्यक्तिगत, समूह या राष्ट्रीय स्तर पर हो सकते हैं। इसमें रोजगार, औसत आय, गरीबी, आय असमानता, उद्योग एवं व्यापार, कृषि, बुनियादी ढ़ाँचा आदि आते हैं। सामाजिक–आर्थिक स्थिति में केवल आर्थिक कारकों का ही नही बल्कि समाजिक कारकों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक मूल्य, सामाजिक गतिशीलता आदि आते है।

स्नातक स्तर एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति

भारत में सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शिक्षा का संबंध काफी जटिल है। भले वर्तमान में स्नातक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करना एक आम बात है लेकिन सभी विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा तक पहुँच समान नही होती है। यह उनके चुने हुये विषयों के साथ उनके भविष्य को भी प्रभावित करती है। कला वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति व्यापक रूप से भिन्न होती है। कुछ छात्र उच्च मध्य वर्ग से होते हैं और उन्हें परिवार से आर्थिक सहायता मिलती है, जबकि अन्य छात्र निम्न या मध्य वर्ग से होते हैं और उन्हें आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस वर्ग के विद्यार्थियों के लिए कैरियर विकल्प होते हैं, जैसे कि शिक्षण, लेखन, कला, सामाजिक कार्य, आदि। हालांकि, इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर हमेशा स्थिर नहीं होते हैं और वे उच्च वेतन वाली नौकरियां प्रदान नहीं करते हैं। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति भी विविध होती है। हालांकि, उच्च मध्य वर्ग और मध्य वर्ग के विद्यार्थियों का प्रतिशत कला वर्ग की तुलना में थोड़ा अधिक हो सकता है। इसमें विद्यार्थियों के लिए इंजीनियरिंग, चिकित्सा, अनुसंधान आदि जैसे क्षेत्रों में कई कैरियर विकल्प होते हैं। इन क्षेत्रों में आमतौर पर उच्च वेतन वाले रोजगार के अवसर होते हैं। वहीं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति भी भिन्न होती है। कई छात्र उच्च मध्य वर्ग या मध्य वर्ग से होते हैं और उन्हें परिवार से आर्थिक सहायता मिलती है। इस वर्ग के विद्यार्थियों के लिए लेखा, वित्त, मार्केटिंग, प्रबंधन आदि जैसे क्षेत्रों में कई कैरियर विकल्प होते हैं। इन क्षेत्रों में आमतौर पर उच्च वेतन वाले रोजगार के अवसर होते हैं। अतः बालक की सामाजिक–आर्थिक स्थिति मुख्य रूप से परिवार की शैक्षिक स्थिति, आर्थिक एवं व्यावसायिक स्थिति पर निर्भर करता है। इस प्रकार विद्यार्थियों को कुछ आधारभूत पहलु प्रभावित करते हैं–

- **शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच**– उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को अक्सर गुणवत्तापूर्ण संस्थानों, शिक्षण सामग्री, प्रौद्योगिकी और वित्तीय स्थिरता सहित शैक्षिक संसाधनों तक बेहतर पहुँच का लाभ मिलता है। ये लाभ उच्च स्तर के अध्ययन या प्रतिस्पर्धी कैरियर योजना बनाने में सक्षम बनाते हैं। इसके विपरीत, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों को वित्तीय बाधाओं, अंशकालिक कार्य दायित्वों, शिक्षण संसाधनों तक सीमित पहुँच और शैक्षिक या कैरियर मार्गदर्शन की कमी जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन बाधाओं के परिणामस्वरूप कम शैक्षणिक प्रदर्शन, देरी से स्नातक होना और सीमित कैरियर के अवसर हो सकते हैं।
- **शैक्षणिक तैयारी–** निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के पास अग्रिम नियुक्ति, पाठ्यक्रम, मानकीकृत परीक्षा की तैयारी और परामर्श सेवाओं तक पहुँच में कमी हो सकती है। जबकि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों के पास इन सभी सेवाओं की पहुँच होती है। ये छात्र अक्सर बेहतर शिक्षण संसाधनों, अनुभवी शिक्षकों और पाठ्येतर

कार्यक्रमों तक पहुँच के साथ अच्छी तरह से वित्त पोषित स्कूलों में पढ़ने जाते हैं। उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों के बीच पढ़ने, लिखने एवं आलोचनात्मक सोच कौशल में अंतर उच्च शिक्षा में बना रह सकता है।

- **मनोवैज्ञानिक एवं भावात्मक कारक –** निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों पर वित्तीय दबाव एवं पढ़ाई के साथ रोजगार संतुलन करने की आवश्यकता उनके तनाव स्तर को बढ़ा सकता है जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक प्रदर्शन प्रभावित होता है। वहीं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों पर इसका प्रभाव कम या न के बराबर होता है।
- **शैक्षिक प्रदर्शन एवं प्रतिधारण–** उच्च सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के पास अक्सर बेहतर शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच होती है, जैसे निजी ट्यूशन और उन्नत पाठ्यक्रम, जो शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ा सकते हैं। वितीय दबाव अक्सर निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को पढ़ाई छोड़ने या अंशकालिक नौकरियों में काम करने के लिए या अपने पाठ्यक्रम का भार कम करने के लिए मजबूर करते हैं।
- **शैक्षणिक विकास में सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को दूर करना–** छात्रवृत्ति, अनुदान और कार्य–अध्ययन के अवसर वित्तीय अंतर को पाटने में मदद कर सकते हैं। कम सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई ट्यूशन, मेंटरिंग और परामर्श सेवाएँ कौशल और भावनात्मक अंतर को दूर कर सकती हैं एवं विश्वविद्यालय पहुँच में सुधार के लिए जरूरत के हिसाब से प्रवेश और छात्र सफलता कार्यक्रम संबंधित समावेशी नीतियाँ बना सकते हैं।

हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के बीच एक मजबूत संबंध होता है। बेहतर शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के पास अच्छी नौकरियाँ और ज्यादा कमाई के साधन होते हैं। जिनके पास पहले से ही कम संसाधन होते हैं उनके बालकों को अच्छी शिक्षा पाने में समस्यायें आती हैं। समाजिक–आर्थिक स्थिति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभवों और परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह सीधे विद्यार्थियों की संसाधनों तक पहुँच, शैक्षिक अवसरों और उच्च शिक्षा में संपूर्ण सफलता को प्रभावित करता है। इस स्तर की शिक्षा न केवल उनके व्यक्तिगत विकास को प्रभावित करती है बल्कि उनके भविष्य की रोजगार क्षमता, आर्थिक गतिशीलता और सामाजिक प्रतिष्ठा को भी निर्धारित करती है। जिन विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति निम्न होती है वे अध्ययन मे कठिनाई का अनुभव करता है। इससे उसकी शैक्षिक निष्पति भी प्रभावित होती है। ग्रामीण इलाकों में ज्यादातर निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के लोग निवास करते हैं इनकी शिक्षा की स्थिति बहुत अच्छी नही है। वहाँ अच्छे कॉलेजों की संख्या कम है और जो कॉलेज हैं भी उनमें उचित सुविधायें नही हैं। इस कारण ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को शहरों में जाकर पढ़ने जाना पड़ता है परंतु इसके लिये विद्यार्थियों को धन की आवश्यकता पड़ती है जो उन पर आर्थिक दबाव डालता है। वहीं शहरी क्षेत्रों में अच्छे कॉलेज एवं उचित सुविधायें मिलने पर वहां के विद्यार्थियों का शैक्षिक विकास तेजी से होता है।

स्नातक स्तर पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विद्यार्थियों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है जो उनके शैक्षिक विकास को प्रभावित करता है। कम आय वाले विद्यार्थियों के पास अक्सर स्वस्थ्य भोजन खरीदने के सीमित संसाधन होते हैं। इससे कुपोषण एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें हो सकती हैं। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति अक्सर सतर्कता, देखभाल, जाँच और उपचार सहित स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच प्रदान करता है। वहीं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले समूहों को बीमा, परिवहन या गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाओं की निकटता जैसी बाधाओं का सामना करने की अधिक संभावना होती है। समय पर छात्र को उचित स्वास्थ्य सेवायें न मिलने पर उसे विभिन्न प्रकार की बीमारियों की से जूझना पड़ता है। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों को पड़ोस में रहने वाले लोगों के प्रदूषण, असुरक्षित आवास और व्यावसायिक जोखिमों जैसे पर्यावरणीय खतरों के संपर्क में आने की अधिक संभावना

होती है। वित्तीय अस्थिरता, आवास की असुरक्षा, या माता–पिता की नौकरी छूटने से दीर्घकालिक तनाव पैदा हो सकता है, जिससे विद्यार्थियों में चिंता या अवसाद हो सकता है। इन विद्यार्थियों की अर्थिक स्थिति सही न होने के कारण ट्यूटर या शैक्षिक प्रौद्योगिकी जैसे संसाधनों तक पहुंच की कमी होती है, जो उनके लिये शैक्षणिक संघर्ष और मानसिक संकट में का कारण बनता है।

निष्कर्ष–

सामाजिक–आर्थिक स्थिति शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की प्रगति, संसाधनों की उपलब्धता, शैक्षणिक प्रदर्शन, और समग्र विकास को गहराई से प्रभावित करती है। यह स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास, अनुभवों और परिणामों को भी प्रभावित करती है। यह उनके भविष्य के कैरियर के अवसरों तक पहुँच को आकार देती है और उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के बीच असमानताओं को उजागर करती है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले लोग वित्तीय स्थिरता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अतिरिक्त सीखने के अवसरों से लाभान्वित होते हैं जबकि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों को अक्सर वित्तीय बाधाओं, सीमित शैक्षणिक संसाधनों और बाहरी जिम्मेदारियों जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जो उनकी प्रगति और उपलब्धियों में बाधा बन सकती हैं।

उच्च शिक्षा में समानता और समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। वित्तीय सहायता, छात्रवृत्ति, मेंटरशिप कार्यक्रम और संस्थागत सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से बनाई गई नीतियाँ इस अंतर को भर देने और सभी विद्यार्थियों के लिए समान अवसर बनाने में मदद कर सकती हैं, चाहे उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। शैक्षिक संस्थानों और नीति निर्माताओं को एक ऐसा माहौल बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए जहाँ प्रत्येक छात्र के पास सफलता के लिए आवश्यक उपकरण और संसाधन हों। स्नातक स्तर की शिक्षा में सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को कम करना न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देने के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह सभी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों को सशक्त बनाकर, समाज अधिक समावेशी, कुशल और समतापूर्ण भविष्य का निर्माण कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- **चौहान, कुमार एवं चौहान, रेनु (2017), सामाजिक–आर्थिक जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।**
- **यादव, अमर बहादुर एवं पाण्डे, अराधना (2022),** उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन, IJCRT, Volume 10, Issues 11, Page 439-451
- **मंडल, गौरीश चन्द्र (2018)** ने ''ए स्टडी ऑफ सोशियो इकॉनोमिक स्टेट्स एण्ड इट्स इंपैक्ट टु एकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ हायर सेकेण्डरी स्कूल्स स्टुडेंट्स'' पी–एच0 डी0 शोध प्रबंध, शोधगंगा।
- **पाण्डे, रमा शंकर (2013)** ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनके घरेलू वातावरण, सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में अध्ययन, पी–एच0 डी0 शोध प्रबंध, शोधगंगा।
- India-Rural Population- 2024 Data 2025 Forecast 1960-2023 Historical Retrieved From tradingeconomics.com
- Kumar, Vijay, Reddy, A. & Satish, K (2020), Comparison between Rural and Urban Socio-Economic Indicators in India, IJESC, Page no. 21863
- Mondal, Gaurish Chandra (2018), A Study Of Socio-Economic Status And Its Impact To Academic Achievement Of Higher Secondary School Students, JETIR, Page No. 189-198